

Types of sins - Part 2

7. Arrogance (Maan)

७. अहंकार (मान)

To be egoistic is called as arrogance. It means to consider yourself above others and think of others as inferior.

अहंकार में रहना, उसे अभिमान में रहना कहते हैं। स्वयं को सबसे बेहतर/बढ़कर मानना और दूसरों को नीचा मानना वह मान है।

I AM THE BEST!



I will respect all living beings

8. Deceit (Maya)

८. माया

To cheat or to be cunning is called as deceit. To mislead someone is also deceit or maya.

किसी को धोखा देना या कपट करना उसे माया कहते हैं। किसी के साथ छल करना उसे बेवकूफ बनाना भी माया है।



I will never cheat

9. Greed (Lobha)

९. लोभ (लालच)

To want more even when you have enough is Greed or Lobh. It can be for anything like jewellery, clothes, money etc.

ज्यादा से ज्यादा लेने की लालच करना। खुद के पास जितना है उससे संतोष नहीं होना और अधिक पाना उसे लोभ कहते हैं। जैसे झवेरात, कपड़े, पैसे पाने की इच्छा।

I want more

More & More



It's mine



I will share my belongings with all

10. Attachemnt (Raga)

१०. राग

Attachment towards anything other than your soul is called as Raag or attachment. It can be for people, things, your own body etc.

किसी वस्तु या व्यक्ति पर आसक्ति रखना उसे राग कहते हैं। जैसे: व्यक्ति, वस्तु, खुद पर लगाव होना इ.।

My Teddy, My World



I will not keep attachment towards worldly things

11. Hatred (Dwesh)

११. द्वेष

When our disliking for something or someone crosses a certain extent or level, it converts to the highest form of anger called Dvesha.

यदि हम किसी वस्तु या व्यक्ति से, हृद से ज्यादा नफरत करे तो वह नफरत, गुस्सा और तिरस्कार भाव, यानि द्वेष में परिवर्तित हो जाता है।



I will respect towards all

12. Discord (Kalah)

१२. कलह

To quarrel with someone due to disagreement or to be in disharmony with someone is called Discord. It often occurs when someone doesn't agree with our thoughts.

कि सी के साथ अनबन होना, मतभेद होने से झगड़ा होना इसे कलह कहते हैं। एक दूसरे की बात से सहमत न होने की वजह से ज्यादातर कलह-झगड़े होते हैं।

